

कार्षीविप्रियं सुमहन्म 5980. 4, 495. 14, 178. R. 2, 22, 8. 26, 33. 98, 14 (107, 2 GORR.). 6, 8, 5. RAGH. 8, 51. KUMĀRAS. 4, 7. तमेव कृतवानस्या नवं विप्रियम् Spr. 1098. BHĀG. P. 6, 5, 42. मा कथा रामविप्रियम् was Rāma unlieb sein könnte R. 3, 42, 58. °कार् KATHĀS. 28, 35. °कारिन् MBH. 1, 5979. प्रज्ञाविप्रियकारिन् Spr. 2694. विप्रियं व्याचरन्मर्त्यो देवानां मृत्युमृच्छति MBH. 3, 2166. विप्रियमन्यत्र (= अन्यस्यो) गूढमाचरति SĪH. D. 74. विप्रियं दा BHĀG. P. 1, 14, 11. वच् MBH. 1, 1876. R. 2, 62, 9. R. GORR. 2, 50, 17 (pl.). 5, 23, 26 (pl.). 6, 5, 5. BHĀG. P. 8, 9, 23. दर्श R. 2, 30, 17. प्राप् 3, 35, 17. देवानां विप्रिये नित्यमृषीणां च स वर्तते HARIV. 6822. अस्माकं विप्रिये रतान् MBH. 7, 3421. यदि स्थास्यति विप्रिये R. 2, 21, 10. Spr. 1776 (Conj.). विप्रियेषु स्थितास्माकम् MBH. 3, 1893. — Vgl. अ°.

विप्रियेकार् adj. Jmd etwas Unliebes erweisend MBH. 12, 12955. — Vgl. प्रियेकार्.

विप्रियव (von विप्रिय) n. das unlieb —, unangenehm Sein Comm. zu BHĀG. P. 1, 7, 16.

विप्रुष् (1. प्रुष् mit वि) f. (nom. विप्रुः) SIDDH. K. 247, b, 2 v. u. Tropfen (TRIK. 3, 3, 209. H. 1089. HALĀJ. 3, 55), Krümchen, Fleckchen, mica: ओ-द्वानाम् AV. 9, 5, 19. VS. 25, 9. TBR. 3, 2, 3, 5, 7, 8, 21. ÇAT. BR. 4, 2, 5, 1. 9, 1, 1, 6. 15. 11, 5, 5, 11. 14, 2, 1, 14. 2, 28. KĪTJ. ÇA. 3, 7, 19. विप्रुडाम् ĀÇV. ÇA. 5, 2, 6. KĪTJ. ÇA. 24, 3, 43. विप्रुषशैव यावत्त्यो निपतति नभस्तलात् । वर्षासु वर्षतः MBH. 13, 5339. fg. न पिबति पयसां विप्रुषः पन्नसंस्थाः Spr. 2013. जल° ÇIC. 8, 40. स्वेद° 2, 18. अमृतरसमुद्र° BHĀG. P. 6, 9, 38. म-द्यविप्रुम् PrĀJACĪTTEND. 19, a, 3. पावक° Feuerfunke Spr. 4301. पाठे तु मुखनिष्क्राता विप्रुषो ब्रह्मविन्द्वः H. 839. मुढ्याः M. 5, 141. auch ohne diesen Beisatz von den Tropfen, die beim Sprechen dem Munde entfallen, 133. JĀG. 1, 193. MĀRK. P. 35, 21. — Vgl. विप्रुष.

विप्रुष wohl n. dass.: वस्त्राम्बुविप्रुषैः MĀRK. P. 50, 95. जलविप्रुषैः 51, 88. °वाहिन्या (so auch die ed. Bomb., eine Berl. Hdschr. soll विप्रुट्-वा° lesen) चङ्वा PĀNĀT. 79, 16. — Vgl. वाग्विप्रुष.

विप्रुष्मत् (von विप्रुष्) adj. mit Tropfen versehen: विषेदोर्मिमारुत BHĀG. P. 10, 16, 5. हिमनिर्कर° (das suff. gehört zum ganzen comp.) 4, 25, 18.

विप्रेतण (von ईन् mit विप्र) n. das sich Umschauen: सिंक्° adj. R. 4, 2, 7. विप्रेतितर् (wie eben) nom. ag. der sich umschaut: सिंक् Spr. 2691. विप्रेत s. u. 3. इ mit विप्र.

विप्रेमन् (2. वि + प्रे°) m. Entfremdung, Entzweiung AIR. Ba. 1, 24. — Vgl. विप्रिय 1).

विप्रोषित s. u. 5. वम् mit विप्र.

1. विप्रव (von वु mit वि) 1) m. am Ende eines adj. comp. f. आ. a) das zu Grunde Gehen, Verlorensein, zu Schanden Werden: त्रैलोक्यस्य Spr. 5120. व्रज° BHĀG. P. 2, 7, 32. भर्तु° 4, 13, 49. शिलीमुखैः । विप्रवो ऽभूदुःखितानाम् 26, 9. प्राण° 1, 18, 2. द्वापरे विप्रवं याति यज्ञाः कलियुगे तथा । अष्टयुगधर्मिणो मर्त्या ऋक्सामानि यज्ञेषु च ॥ MBH. 12, 8543. मह्यो न गच्छति विप्रवम् Spr. 1875. मह° 1349 (II). यज्ञ° RĀGĀ-TAR. 1, 184. विश्वामित्रमखस्य विप्रवकृतो नक्तं चरान् Verz. d. Oxf. H. 121, b, No. 213. ÇI. 3. धर्म° MBH. 1, 3872. KATHĀS. 89, 72. बुद्धि° MBH. 2, 868. सन्न° RAGH. 8, 41. भाग्य° 46. धैर्यविप्रवकारिन् Spr. 1053. शील° KATHĀS. 13, 87, 29. 113. RĀGĀ-TAR. 3, 500. प्रतिज्ञात° 88. संकल्प° 89. जनताय° BHĀG. P.

1, 5, 11. आत्मलोकावर्णास्य 8, 3, 25. SARVADARÇANAS. 17, 6. Verlust bei einem Geschäft JĀG. 2, 260. अ° adj. JOGAS. 2, 26. — b) Noth, Elend, Drangsal, Calamität: सखिदरे MBH. 13, 4827. शास्त्रागमे Ver. in LA. (III) 30, 9. द्विजातीनां च वर्णानां विप्रवे कालकारिते M. 8, 348. MBH. 3, 13474. दिव्यमानुष° DAÇAR. 4, 60. देश° JĀG. 3, 29. RĀGĀ-TAR. 5, 471. राश्यदेशादि° SĪH. D. 278. KATHĀS. 91, 4. तोय°, जल°, सलिल° Wasser-noth, Ueberschwemmung RĀGĀ-TAR. 1, 159. 5, 80. 95. तुहिन° 1, 183. दु-र्भित° 2, 20. KATHĀS. 56, 12. अग्नि° RĀGĀ-TAR. 1, 252. भितु° 184. प्रकृषा° MĀLAY. 9, 3. पञ्चाग्नि° KATHĀS. 101, 285. क्षोश° 156. विकल्प° Spr. 4591. नै-रिवासन्नविप्रवा (so die neuere Ausg.) so v. a. Schiffbruch HARIV. 2885. — c) Unruhen im Lande, Aufstand AK. 3, 3, 14. H. 803. HALĀJ. 1, 127. RĀGĀ-TAR. 5, 19, 8, 531. 796. 883. 965. विप्रवोन्मुख 559. 2261. उर्वी शमितविप्रवा 1041. °स्पृष् 915. गौडराजस° 4, 334. प्रज्ञाविप्रवशान्ति 715. 5, 420. 8, 993. राज्य° 6, 334. 336. राष्ट्र° Spr. (II) 1221, v. l. — d) योनि° so v. a. ein ge-schlechtliches Vergehen von Seiten einer Frau HARIV. 7762. विप्रव allein so v. a. Schändung —, Entehrung eines Frauenzimmers: क्वः कृतो ऽमुना नूनं ममात्तः पुर्वविप्रवः KATHĀS. 5, 36. अनङ्गीकृत° (so ist zu lesen) 7, 58. 20, 120. प्रज्ञारहितविप्रवा 64, 41. अविप्रवा (= साध्वी NILAK.) MBH. 1, 2070 nach der Lesart der ed. Bomb. (अविप्रवा ed. Calc.). — 2) adj. (f. आ) verworren: गिरः BHĀG. P. 7, 8, 12. — Vgl. चित°.

2. विप्रवं (2. वि + प्रव) adj. kein Schiff habend: वणिजो नावि भिन्ना-यामगाधे विप्रवा (ऽविप्रवा ed. Bomb.) इव । अपारे पारमिच्छतः MBH. 9, 130 = 8, 4838, wo beide Ausgg. विप्रवे lesen; vgl. अपारे भव नः पारम-प्रवे भव नः प्रवः 5, 4559.

विप्रवता MBH. 12, 11148 fehlerhaft für विज्ञवता, wie die ed. Bomb. hat. विप्रविन् (von वु mit वि) adj. dahingehend, verschwindend: हरिणीव च राजश्रीरेवं विप्रविनी सदा Spr. 5393.

विप्रव (wie eben) m. Galopp ÇABDĀRTHAK. bei WILSON.

विप्रवक (vom caus. von वु mit वि) adj. zu Schanden machend, schän-dend: वेद° (durch Mittheilung an unberechtigte Personen) PRAB. 20, 14. धर्म° ÇAT. 14, 101.

विप्रविन् adj. dass.: वेद° PrĀJACĪTTEND. 47, b, 3.

विप्रुति f. = विप्रव 1) a): विप्रुतिं गतः Suçr. 2, 342, 14.

विप्रुष f. = विप्रुष् AK. 1, 2, 3, 6 (nach ÇKDR. von RĀMĀCRAJA er-wähnte v. l., nicht Lesart des Textes, der विप्रुष haben soll). पाठे वि-प्रुषो ब्रह्मविन्द्वः 2, 7, 38.

विफ (2. वि + फ) adj. ohne फ (सफ mit फ) PĀNĀT. Ba. 8, 5, 7.

विफल (2. वि + फल) adj. (f. आ) 1) keine Früchte tragend: Bäume Spr. 1395. 5046. VARĀH. BṚH. 3, 7. — 2) keinen Erfolg habend, seinen Zweck verfehrend, nutzlos, vergeblich: विफलारम्भ JĀG. 1, 273. शक्रशा-सन HARIV. 4126. विफलाश (निष्फलाश die neuere Ausg.) 9351. KĪM. NĪTIS. 18, 1. पारणा RAGH. ed. Calc. 2, 55. पल KUMĀRAS. 7, 66. Spr. 1223. 1395. 2989. परितोषकालाः 3012. MEGH. 69. VARĀH. BṚH. 9, 3. GĪT. 5, 17. KATHĀS. 13, 122. 21, 30. भुज 42, 79. 54, 175. 58, 48. RĀGĀ-TAR. 4, 304. 716. fg. BHĀG. P. 5, 14, 1. 8, 3, 47. fg. MĀRK. P. 75, 56. 95, 23. Verz. d. Oxf. H. 239. a, 13. PRAB. 73, 6. KUSUM. 8, 15. SARVADARÇANAS. 24, 20. fg. keinen Erfolg habend, von einer Person so v. a. nicht zum Ziele gelangend, dessen Hoffnungen vereitelt werden Spr. 1689, v. l. für निराश. — 3) keine Ho-